61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

61-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2023 ജനുവരി 3 - 7 കോഴിക്കോട്

Item Code: 642 Participant Code: 110

बदली गई ज़िंदगियाँ

अपनी उस पुराने घर की आँगन में बैठते हुए वह बूढ़ी औरत अपने यादों में डूब जाती है। मन में कोई अनजान चीज़ें आपस में लड़ रहे हैं। उन्हें पता नहीं क्या करना है। महीली अपनी आँखे बंद किया।

कई साल पहले। एक बर्फ़ीले रात। एक औरत बर्फ से सफेद हुए रास्ते से अपनी प्यारी बच्ची के साथ चल रहा है। रास्ते में वह रुकता है और एक दुकान की अंदर चले जाती है। उस औरत वहाँ काम करती है। पति के चले जाने के बाद रात-दिन वह कठिन मेहनत करती थी। अपनी प्यारी परी को वह बहुत प्यार करती थी। हर सुबह वह अपने बच्चे को स्कूल ले जाया करती थी। अपनी माँ की साथ रहना छोटी परी को बहुत पसंद था। अपनी दर्द माँ बच्चे को कभी दिखाना नहीं चाहता था। शादी के दिन से घरवाले उन्हें अकेला कर दिया। फिर भी अपने पति के साथ वह बहुत खुश था। पर उन खूबसूरत दिनों मुरझाने में देर नहीं लगाया। किसी और व्यक्ति उसे पाना चाहता था। उस भयानक आदमी महीली को अपनाने केलिए उसकी पति को मार डाला। अमीर बनने के कारण उसे कोई पकड़ नहीं पाया। महीली को शादी करनेकेलिए वह आया। पर महीली अपने बच्चे के साथ वहाँ से दूसरे शहर में भाग निकला। उसे पता था वह आसानी से बच नहीं पाएगी। फिर भी उस अनजान शहर में अपने बच्चे को पालने केलिए वह कठिन मेहनत किया।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

हर दिन की तरह उस दिन भी ठीक से चल रहा था। वह अपने बच्ची सोनु के हाथ पकड़कर स्कूल जा रहा था। खुशी भरी वातावरण। महीली कुछ लेने केलिए पीछे मुड़कर देखा। उसके दिल तेज़ी से धड़-धड़ा रहा था। वहाँ खड़ा हुआ था महेश, जिस व्यक्ति उसके पति को मारा। महेश ने महीली के पास आकर कहा कि अब उसका जिंदगी खराब होने वाला है। महीली ने रक्तमय आँखों से उसे देखा। अगली दिन महेश महीली की घर के सामने खड़ा हुआ था। महीली को देखते ही वो वहाँ से चला गया। महीली को पता चला कि वह कुछ काला करने वाला है। जब उस दिन बच्ची को वापस केलिए स्कूल गया तो उसे पता चला कि अपनी प्यारी सोनू घर आ चुके हैं। उसे कुछ ठीक नहीं लगा। उसने घर की तरफ भागा। सोनू कहीं पर भी नहीं था। एक नाम उसके दिल में आया, महेश। वह घर से भागकर महेश के पास गया। महेश उसे देखते ही एक डरावनी मुस्कुराहट दिखाई। महीली सारी दुनिया अपने सिर के ऊपर देखा। सोनू को उस दिन के बाद वह कभी नहीं देखा। सारी दुख और नफरत से भरी दिल से महीली अपने आप को कमरे में बंद किया। कई दिनों तक बाहर नहीं आया।

महेश अपने दोस्तों के साथ खुशी से बातें करकर खड़ा हुआ था। दूर से वह देखा नफ़रत भरी, रक्तमय आँखें। वे आँखें उसने पहचाना... महीली...। महीली धीरे से उसके पास आया। उसकी चेहरे में एक मुस्कुराहट फैली थी। वह खुशी की नहीं थी। यह देखकर महेश की दिल में खबराहट आ जाते हैं। महीली उसके

पास आकर कहा, जो तूने मेरी परिवार के साथ किया, वह मैं तुम्हारे साथ करूँगी। महीली ने उसे ज़ोर से मारा। कोई उसे रोक नहीं पाई। वह मैय्या के मृत्यु करने में सफल हुआ। महीली हाँसना शुरु किया। सब लोग उसे देखकर ड़रकर दूर चला गया। महीली वहाँ पड़ी गर्म खून को अपने चेहरे में लगाया। उसे आसपास के कुछ भी सुनाई नहीं दे रहे थे। पोलीस आकर उसे अपने साथ ले गया। उसने कहा, आखिर इस समय आ ही गया। मुझे इस रूप में तब्दील होने के कारण हम लोग ही हैं। मुझे इनसाफ नहीं मिली तो मैं अपनी आप ही लूँगी। तब ही तुम लोग समझोगे। हमारे जैसे लोगों की ओर देखेगा। महीली ज़ोर से हाँसा। उसकी आँखों में चमक रहे थे।

सालों के बाद महीली को छुड़वा देते हैं। वह मरना चाहता था। पर कोई उसके दिल में मना कर रहा था। जैल से निकलकर उस तंग गली से वह चला। चलते - चलते एक घर के सामने रुक गया। घर... जहाँ यादें दबे हुए हैं। उस बूढ़ी औरत अपने पुराने आँगन में गया। वहाँ एक छोटी बच्ची अपनी माँ के साथ खेल रही थी। वहाँ बैठकर वह यादों में डूबा। कुछ समय बात वहाँ से बाहर निकला। वह चलकर यादों की छाया में ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ सावन होने तक डूबते गया।